Research Paper | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 8 | AUGUST 2024

भारतीय समाज और लिव-इन रिलेशनशिप : एक विवेचना

धर्मदास जैसवार [1]

[1] **सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, सेठ फूलचंद छीतरमल जैन महाविद्यालय पीसांगन, अजमेर.**

ABSTRACT:

हिन्दू धर्म में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक माना गया है, यह पत्नी-पति का अटूट बंधन है जो किसी भी परिस्थिती में नहीं तोड़ा जाता है। आठ पकार के विवाह में से एक प्रकार गंधर्व विवाह का भी है जिसका आधुनिक रुप लिव-इन-रिलेशनशिप के रुप में भारतीय समाज में पांव पसार रहा है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें दो लोग जिनका विवाह नहीं हुआ, साथ रहते है और पति-पत्नी की तरह आपस सबंध स्नेहात्मक होते है में शारिरिक सम्बंध बनाते है। यह संबंध स्नेहात्मक होते हैं जो सफल भी हो सकते है अथवा असफल भी। लिव-इन-रिलेशनशिप भारतीय समाज की मान्यताओं और ताने बाने की चुनौती दे रहा है।

KEYWORDS:

प्रेरक कारण, दुष्परिणाम।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
11th August 2024	12th August 2024

विषय प्रवेश:-

लिव-इन रिलेशनशिप एक सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव की शुरुआत है, जिसने भारतीय समाज में नए रिश्तों की दृष्टि को परिवर्तित किया है। लिव-इन की शुरुआत विभिन्न कारणों से हुई जिसमें पश्चिमी सामाजिक प्रणालियों का प्रभाव भी शामिल है जो व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और कक्तिगत चयन को महत्वपूर्ण मानती है। यह आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ाती शिक्षा और समाज में महिलाओं के स्थान के साथ जुड़ा हुआ दिखाई देता है लिव-इन को पहले समाज में आस्वीकार किया जाता था लेकिन समय के साथ साथ यह विचार शहरी समाज में तेजी से फैल रहा है। लिव-इन की अब भारतीय समाज में एक स्वभाविक और स्वीकृत रिश्ता माना जाता है। भारत मे लिव-इन को कानूनी मंजूरी 1978 में मिली थी। सुप्रीम कोर्ट ने बद्री प्रसाद बनाम डायरेक्टर ऑफ कंसालिडेशन केस में पहली बार वैध माना था। इसके बाद 2010 में महिलाओं की सुरक्षा पर चर्चा करते हुऐ लिव इन को कानूनी मान्यता दी गई थी। विश्व भर में विभिन्न सामाजिक और अन्य मुद्दो पर शोध करने वाली संस्था 'रिसर्चगेट' भारतीय युवाओं में बढते लिव-इन के क्रेज को लेकर शोध करने का कार्य किया था।

रिसर्चगेट ने अपने शोध में युवाओं में बढते लिव-इन रिलेशनशिप क्रेज के पांच प्रमुख कारण बताऐ है। इसमें शहरीकरण व आधुनिकीकरण, आर्थिक रूप से सक्षम व समान जिम्मेदारी के साथ -साथ आपात में विवाद होने पर शादी की तुलना में अपनी-अपनी राह को अलग कर लेना प्रमुख वजह है।

1. शहरीकरण और आधुनिकीकरण:- रिसर्च गेट के शोध में कहा गया है कि भारतीय समाज में यह गलत धारणा फैली है कि लिव-इन रिश्ते मुख्य रूप से शारीरिक सुख के इर्द-गिर्द घूमते है जबकि वास्तव में प्रत्येक मामले में ऐसा नहीं है। इनके अनुसार युवाओं की लिव-इन चुनने के लिए कई प्रकार की प्रेरणाए मिलती है और इसमें से शहरीकरण, खासकर महानगरीय जीवन शैली और आधुनिकीकरण जो समकालीन जीवन के केन्द्र के रूप में कार्य करते हैं। शहरी परिवेश रिश्तों के प्रति उदार दृष्टिकोण को बढ़ावा देता जो उन पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देता है जो कभी विवाह की पवित्रता को निर्धारित करते थे। इन्ही कारणों से युवा लिव इन रिलेशन शिप को तरजीह देते हैं।

2. वैश्वीकरण और शिक्षा:- शोध के अनुसार वैश्वीकरण, मीडिया और शिक्षा के प्रभाव ने संस्कृतियों और विचारों का आदान-प्रदान किया है जिससे शहरी लोगों ने पश्चिमी समाजों में प्रचलित रिश्तों के वैकल्पिक मॉडल लिव इन रिलेशनशिप से अवगत कराया है। टेलीविजन, फिल्मों और सोशल मीडिया प्लेटफार्म सहित जनसंचार माध्यमों ने लिव-इन की अवधारणा को सामान्य बना दिया है और शहरी युवाओं के बीच इसकी स्वीकृति की बढाया।

3. वैवाहिक जीवन का पूर्वाभ्यास है लिव-इन रिलेशनशिप:- शोध के अनुसार युवा शादी से पहले लिव इन में रहना चाहते है क्योंकि वे विवाह करने से पहले पूर्वाभ्यास करके आगे के जीवन भर साथ निभाने के लिए लिव-इन रिलेशन के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले उनकी अनुकूलता का आकलन कर सके। इस अवधि के दौरान इस रिश्ते में रहने वाले युवा पार्टनरी का लक्ष्य धन, लिंग, धर्म और राजनीति जैसे विभिन्न पहलुओं पर एक दूसरे के साझा हितों और दृष्टिकोण को समझता है युवा ऐसा इसीलिए करते हैं कि एक सफल रिश्ते की नींव रख सके उनका मानना है कि लिव-इन जोड़ों को शादी के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले उनकी अनुकूलता का आंकलन करने की अनुमति देता है।

4. वित्तीय निर्णय लेने की आजादी और समान जिम्मेदारी : - युवाओं का मानना है कि वैवाहिक जीवन में आर्थिक निर्णय आमतौर पर पति-पत्नी द्वारा सयुक्त रूप से लिए जाते है और दोनों इसका पालन करने के लिए बाध्य होते है। वहीं लिव-इन रिलेशनशिप में लड़का लड़की अपने स्वंय के वित्तीय निर्णयों पर स्वायत्तता बरकार रखते हैं। इसका अर्थ यह है कि जब एक साथी अपना धन खर्च करना चाहता है तो वह दूसरे के हस्तक्षेप के बिना ऐसा करने के लिए स्वतंत्र है। इसके अतिरिक्त दोनों भागीदार कुछ वित्तीय जिम्मेदारिया साझा करना चुन सकते है। इसकी वजह से उनके बीच झगड़े कम होते है इस रिश्ते में विवाह की तुलना में जिम्मेदारी का बोझ काफी कम होता है क्योंकि विवाह पीढियों से चली आ रही एक पारंपरिक संस्था है जो अक्सर प्रत्येक पति की जिम्मेदारी तय करता है।

5. आसानी से अलग होना:- शोध के अनुसार लिव-इन रिलेशनशिप के प्रति युवाओं में क्रेज इसलिए बढ रहा है क्योंकि इस रिश्ते की अवधारणा पारंपरिक प्रतिबद्धताओं के बिना रिश्तों की चाहत के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव से उत्पन होती है। विवाह के विपरित लिव-इन संबंधों में भागीदारी के बीच कानूनी दायित्वों की कमी होती है जिसकी वजह से इस रिश्ते मे शामिल होना और अलग होना आसान हो जाता है। वहीं एक बार शादी होने के बाद अलग होने में काफी जटिल कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करना होता है।

यधपि लिव-इन रिलेशनशिप के कुछ नुकसान भी है जो निम्न प्रकार है-

1. अविश्वास का डर:- लिव इन रिलेशनशिप में रहने वालों में अविश्वात का डर हमेशा ही सताता रहता है। इस रिश्ते में दोनों ही पार्टनर रिश्ते से बाहर आने के लिए स्वतंत्र होते है। इसीलिए दोनों में ही यह डर सताता रहता है और इस कारण वह जोड़ा अपनी जिंदगी को खुलकर खुशी-खुशी व्यतीत नहीं कर पाते है। अविश्वास के चलते यह एक अनजाने भय का माहौल उनके इर्द-गिर्द बना रहता है।

2. रिश्ता टूटने में आसान:- कई बार एक पार्टनर दूसरे को आहत करके आगे बढ़ जाता है। इस रिश्ते में वादे और कसमें तो है पर तब अपनी इच्छा पर निर्भर करता है । रिश्तों की कोई सामाजिक बाध्यता नही होने के कारण इसमें आसानी से बाहर आ जाते है जबकि शादी में रिश्तों में बाहर आने के लिये कानूनी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है और इस कानूनी प्रक्रिया मे कई साल भी लग जाते है।

3. बच्चों पर बुरा प्रभाव:- लिव-इन में रहने वालों के बच्चों केदिमाग पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अमूमन इनके बच्चों में नियमों के प्रति सम्मान नही होता है। इसके अतिरिक्त वो समाज में दूसरे बच्चों से ज्यादा असुरक्षित महसूस करते है। यदि उनके माता-पिता किसी कारण वश अलग हो जाते है तो उनको पारिवारिक मान्यताओं, सामाजिक, मूल्यो, सामाजिक प्रतिबद्धताओं व उसकी जरूरतों के बारे में सही से कुछ भी भान नहीं हो पाता है। वे बच्चे असंस्कारी, अपारिवारिक परिवेश में पोषित होकर उनका व्यक्तित्व विकास अवरुद्ध हो जाता है और वे कुंठित मानसिकता से ग्रसित हो जाते है इससे समाज में एक नये वर्ग का जन्म होता है जो अंतत हिंसा, व्याभिचार की ओर अग्रसर होते है।

4. सामाजिक निंदा का सामना करना:- भले ही आज के समाज में लिव इन तेजी से युवाओं के बीच प्रचलन में है लेकिन भारतीय समाज की मान्यताओं में इसको सामाजिक मान्यता नही मिल पाई है। इस प्रकार के जोड़े को समाज में अच्छी नजर से नहीं आंका जाता है। इस प्रकार के जोड़े को आवास, सामाजिक सुरक्षा के लिऐ पग-पग पर संघर्ष करते हुए देखा जा सकता है।

5. महिलाओं के लिए नई समस्याएं:- भारतीय समाज में आज भी पुरुष प्रधान सोच हावी है। ऐसे में लिव-इन से यदि पुरुष साथी चला जाता है तो महिला को समाज में कई प्रताड़नाओ का सामना करना पड़ता है। ऐसी महिलाओं में सामाजिक असुरक्षा की भावना घर कर जाती है और उन्हें पुनः लिव इन साथी मिलने में भी मुश्किल होती है।

सारांश:-

भारतीय समाज एवं सविंधान मे विवाह की मान्यता प्रदान कर उसे सामाजिक एवं कानूनी संरक्षण प्रदान किया गया है। लिव-इन रिलेशनशिप की अवधारणा नैतिकता का विषय है लेकिन यह कानून के अनुसार अवैध नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि दो वयस्क लोगों का एक साथ रहना उनके जीवन का अधिकार है और इसीलिए इसे अवैध नहीं माना जा सकता है भारत एक ऐसा देश है जहां नैतिकता का पालन करना बहुत जरूरी है। इस प्रकार के सहवास को सामाजिक मान्यताओं का उल्लंघन के रुप में देखा जाता है। यह एक प्रकार की सामाजिक उच्छश्रृंखलता है जो कि पारिवारिक ताने-बाने पर चोट करता है, यह एक प्रकार का अनैतिक कार्य है जो सामाजिक जिम्मेदारियों से दूर भागने की शिक्षा देता है।

REFERENCES

1. एस. एल. दोषी - आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

2. प्रो. एम. एल. गुप्ता , डॉ. डी.डी. शर्मा – समाजशास्त्र

3. संजय गॉर - लिव-इन रिलेशनशिप

4. डॉ. जयवीरसिंह , सिरिल गौरन - लिव इन रिलेशनशिप वर्तमान परिदृश्य